महाभारत के लिपिकार, भगवान श्रीगणेश

स्वामी शान्तानन्द द्वारा लिखित

रामायण और महाभारत, भारत के दो प्रसिद्ध महाकाव्य हैं। महाभारत की रचना महर्षि वेदव्यास जी ने की थी। महाभारत में एक लाख से भी अधिक श्लोक हैं और इसी कारण यह ग्रन्थ प्राचीन ग्रीस के दो प्रसिद्ध महाकाव्यों, इलियाड व ओडिसी की संयुक्त लम्बाई से भी लगभग चार गुना अधिक बड़ा है।

'महा' का अर्थ है विशाल और 'भारत' का सम्बन्ध उन प्रसिद्ध सम्राट भरत से है जिन्होंने उस राजवंश की नींव रखी थी जिसके सदस्य इस महाकाव्य के मुख्य पात्र हैं। 'भरतवंश का महाकाव्य,' धर्म और अधर्म की शक्तियों के बीच हुए उस महासंघर्ष की गाथा का सुस्पष्ट अलंकारिक भाषा में वर्णन करता है जो अनन्तकाल से मानवजाति की अन्तर्जात प्रवृत्ति रही है।

यह कहानी इस विषय में है कि महाभारत की रचना किस प्रकार हुई।

***

महाभारत के प्रारम्भ में महर्षि वेदव्यास बताते हैं कि इस महाकाव्य की कथावस्तु का ज्ञान मूलतः उन्हें ध्यान में हुए एक दृष्टान्त से हुआ था।

इस दृष्टान्त के उपरान्त, अगले तीन वर्षों तक महर्षि वेदव्यास महाभारत के पदों की रचना अपने मन में करते रहे। फिर उनकी इच्छा हुई कि वे इस पवित्र महाकाव्य को एक धरोहर के रूप में मानवजाति को सौंपें। अतः उन्होंने एक ऐसे लिपिकार की खोज आरम्भ की जिसमें बुद्धिमत्ता के साथ-साथ दीर्घकाल तक लिख पाने की शक्ति भी हो। महर्षि वेदव्यास ने सृष्टि के रचयिता ब्रह्मदेव का ध्यान किया और उनसे सहायता के लिए प्रार्थना की। ब्रह्मदेव ने वेदव्यास जी के सम्मुख प्रकट होकर उन्हें सुझाव दिया कि वे भगवान श्रीगणेश से प्रार्थना करें व उनसे लिपिकार बनने का निवेदन करें।

भव्य पर्वतराज हिमालय की तलहटी में विशाल, हरे-भरे वृक्षों, सुरभित पुष्पों और निकट ही घास चरते हिरणों से युक्त वन में स्थित अपने आश्रम में महर्षि वेदव्यास, भगवान श्रीगणेश का ध्यान करने लगे। समय आने पर श्रीगजानन उनके समक्ष प्रकट हुए। अत्यन्त श्रद्धाभाव से महर्षि वेदव्यास ने गणेश जी से पूछा कि क्या वे उनके द्वारा रचित महाकाव्य को लिपिबद्ध करने की कृपा करेंगे।

भगवान श्रीगणेश ने उनकी इस प्रार्थना को इस शर्त पर स्वीकार किया कि लिखते समय उनकी लेखनी रुकनी नहीं चाहिए। इसका अर्थ यह था कि महर्षि वेदव्यास को बिना रुके, बिना दुविधा के वर्णन करते रहना होगा।

यह सुनकर, वेदव्यास जी पहले तो यह सोचकर उलझन में पड़ गए कि बोलते समय उन्हें तो मन में रचे हुए पदों को स्मरण करने के लिए समय चाहिए होगा। अन्ततः उन्होंने एक समाधान निकाला। उन्होंने भगवान श्रीगणेश की शर्त को स्वीकार किया और बदले में यह शर्त रखी कि हर पद को लिपिबद्ध करने से पूर्व श्रीगणेश जी को उसे समझना होगा। भगवान श्रीगणेश ने यह शर्त स्वीकार की और महर्षि वेदव्यास ने बोलना आरम्भ किया।

वेदव्यास जी एक के बाद एक, श्लोक बोलते गए। बीच-बीच में वे कोई अधिक जटिल श्लोक बोल देते और भगवान श्रीगणेश को उसके अर्थ को समझने के लिए अपने लेखन की गति को धीमा कर देना होता। इस प्रकार, महर्षि वेदव्यास को अगले श्लोकों का स्पष्टरूप से स्मरण करने के लिए समय मिल जाता और कथावाचन जारी रहता।

भगवान श्रीगणेश, महर्षि वेदव्यास द्वारा उच्चारित प्रत्येक शब्द को समझकर परिश्रमपूर्वक लिखते रहे। वे लिखते रहे, लिखते रहे और लिखते ही रहे—और लेखन के बीच ही अचानक, पंख से बनी उनकी लेखनी टूट गई! पर उन्होंने तो वचन दिया था कि वे बिना रुके लिखते जाएँगे, अतः श्रीगणेश जी ने अपना एक दाँत तोड़ा, उसे स्याही में डुबोया और लेखनी के रूप में उसका प्रयोग करने लगे। अतः ग्रन्थ का लेखन बिना किसी विघ्न के आगे बढ़ता गया। यही कारण है कि भगवान श्रीगणेश का एक नाम 'एकदन्त' भी है।

अन्ततः, व्यास जी ने अपनी कथा की समाप्ति कर अपनी वाणी को विराम दिया, और महाभारत का समापन हुआ। भगवान श्रीगणेश ने अपनी दन्त रूपी लेखनी को नीचे रख दिया। उन दोनों ने जिस ग्रन्थ की रचना की, वह एक उत्कृष्ट कृति थी, गहन सिखावनियों का एक ख़ज़ाना था जिसमें साधना से सम्बन्धित तथा मानवमात्र के जीवन के हर क्षेत्र व सामाजिक परिस्थिति के हर स्तर से सम्बन्धित एक लाख से भी अधिक श्लोक थे। और यह समग्र ज्ञान अब भावी पीढ़ियों के लिए लिपिबद्ध हो चुका था ।

तत्पश्चात्, शताब्दियों व सहस्राब्दियों से लेकर आज तक लोग महाभारत को पढ़ते और उसका अध्ययन करते आ रहे हैं। भारत के व भारतीय मूल के कितने ही लोग, महाभारत की कहानियाँ सुनकर पले-बढ़े हैं। बहुत-से लोग तो आध्यात्मिक अभ्यास के रूप में इस ग्रन्थ के सभी श्लोकों का पाठ करने का संकल्प लेते हैं और लम्बे समय तक इस अभ्यास के प्रति वचनबद्ध रहते हैं। यही नहीं, ७०० श्लोकों वाला ग्रन्थ श्रीभगवद्गीता, इस महाभारत का ही एक भाग है जो विश्व के सर्वाधिक

सम्माननीय आध्यात्मिक ग्रन्थों में से एक है। श्रीभगवद्गीता ने अनेक पीढ़ियों के जिज्ञासुओं को यह उपदेश प्रदान किया है कि सद्गुणों से भरा जीवन कैसे जिएँ और इसी जीवन में सत्य का ज्ञान कैसे प्राप्त करें।

महर्षि वेदव्यास जी द्वारा वर्णित और भगवान श्रीगणेश जी द्वारा निरन्तर लिपिबद्ध की गई महाभारत की यह समृद्ध कथा प्रभावशाली रूप से एक उपहार ही है, एक वरदान ही है, ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। अपने प्रत्येक वाचन, प्रत्येक पाठ, प्रत्येक अभिनीत लीला द्वारा महाभारत आज भी मानवता के लिए फलदायी बनी हुई है।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।